Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
5
2017
VOL. 140

FOUNDER'S ESSAY

प्रेम से कभी नहीं मुकरना

एक विवाहित दंपति के बीच का प्रेम सचमुच में क्या है , जब आप इसकी तह तक जाते हैं तो एक दूसरे को नहीं छोड़ने का भाव मिलता है।

एक दूसरे से अलग नहीं होने के भाव में क्षमाशीलता का होना आवश्यक है। कोई बात नहीं, कितना भी प्रेम दोनों के बीच है, यदि वे हर दिन सुबह से रात तक एक दूसरे की पैनी दृष्टि में रहते हैं तो स्वभावत: वे धीरे धीरे एक दूसरे की खामियाँ निकालना शुरू कर देंगे। और यदि वे दोनों हर विषय में गलती खोज लेते हैं और उसके औचित्य अनौचित्य पर बहस करते हैं, तो वे अपने जीवन के शेष भाग में एक साथ नहीं रह पायेंगे।

जिस समय एक स्त्री और एक पुरुष वैवाहिक संबन्ध में जुड़ते हैं उस समय तक एक दूसरे से अनजान रहते हैं, इसलिए वे प्रारंभ से ही एक दूसरे के बारे में सब कुछ जानने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं। विवाहित जीवन दिल और दिमाग से एक बनकर एक दूसरे की मदद और सहयोग करने के लिए है और अपने सम्मिलित प्रयासों को एक आकार देने और मनुष्य के रूप में एक साथ विकास करने के तरीके के बारे में है।

हाल ही में ऐसे पुरुषों की संख्या बढ़ी है, जो विवाह करना चाहते हैं, लेकिन असफल हैं। निराश पुरुषों की शिकायत है कि "महिलाओं के लिए शादी एक विक्रेता का बाजार है, और हम एक ऐसे युग में हैं जिसमें पुरुषों के पास कोई विकल्प नहीं है, बल्कि उनको प्रसन्न करना है।"

हालांकि, कौन किसको समायोजित करे, ऐसी चीजें समय के साथ नहीं बदलनी चाहिए। जब पुरुष और महिला एकदूसरे से मिलते जुलते हैं, पसंद करने और सोचने के तरीकों को स्वीकार करते हैं, तो यह पारस्परिक क्षमाशीलता के माहौल को जन्म देती है।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co.), p. 78-79

Living the Lotus
Vol. 140 (May 2017)

Senior Editor: Shoko Mizutani
Copy Editor: Parmita Shekhar
Editorial Staff of RK International

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: shanzai.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

President's Guidance

मुझे मदद करने की अनुमति दें

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

हम असीम संबंधों के साथ जी रहे हैं

इस महीने का विषय, “मुझे मदद करने की अनुमति दें,” हम रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्यों के लिए एक परिचित अभिव्यक्ति है जिसका हम प्रयोग करते हैं जब हम दूसरों की मदद करने के लिए अनुमति लेते हैं। रोबोटिक्स के विशेषज्ञ मासाहिरो मोरी (जन्म 1927) एक धर्मनिष्ठ बौद्ध के रूप में सुप्रसिद्ध हैं। उन्होंने कहा है, “बौद्ध धर्म के अनुसार, जब हम कुछ करते हैं तो हम अपना आभार व्यक्त करते हैं, क्योंकि ऐसा कुछ नहीं है जो हम केवल अपनी शक्ति से कर सकते हैं ” (*Imao ikite iku chikara, rokuharamitsu* / छह पारमिता, वर्तमान में रहने की शक्ति, *Kyoiku Hyoronsha,* 2009)।

उदाहरण के लिए, लोग मान सकते हैं कि वे अपनी शक्ति से खड़े हैं, लेकिन डॉ मोरी ने लिखा है, “वास्तव में यह उनके पैरों के नीचे की धरती और गुरुत्वाकर्षण की उपस्थिति के कारण है। इसलिए यह मानने के बजाय कि उनके लिए केवल एक ही कारण है, अर्थात् केवल अपनी शक्ति से ही कुछ करते हैं, उन्हें यह पहचाना चाहिए कि जो कुछ भी करते हैं, वह दूसरों की शक्ति के सहयोग से संभव होता है।”

जापानी बौद्ध धर्म के सोतो संप्रदाय के पूज्य शुन्दो आओयामा ने सरल सुगम्य शब्दों में इस संबंध में लिखा है: “इस संसार में सब कुछ कितना भी छोटा क्यों न हो, परस्पर संबद्धता की स्थिति में है, अर्थात् वे परस्पर एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं,” (*Doro ga aru kara hana ga saku* [चूँकि मिट्टी है, इस कारण से फूल खिलते हैं], *Gentosha,* 2016)। इसका मतलब है कि सभी चीजों की उत्पत्ति और वय जुड़े कारणों और परिस्थितियों के कार्य के माध्यम से है। इस धार्मिक विश्वदृष्टि से उत्पन्न अभिव्यक्ति “मुझे मदद करने की अनुमति देती है।”

इस अर्थ में यह कहा जा सकता है कि यह अभिव्यक्ति मुख्य रूप से उस महान शक्ति के प्रति हमारी कृतज्ञता की भावना को दर्शाता है जो हमारे लगातार जीने का कारण बनता है। यह "सब कुछ के प्रति धन्यवाद और दूसरों की सहायता करने में सक्षम रहने" की भावना का प्रतीक है।

इसके अलावा, “मुझे मदद करने की अनुमति दें" का प्रयोग स्वयं के कार्यों के लिए विनम्रता व्यक्त करने हेतु भी होता है। ऐसे समय में, हालांकि, यह प्रश्न भी उठ सकता है कि वक्ता और श्रोता की भावनाओं के बीच एक अंतर होता है। जिस व्यक्ति से हम बातें कर रहे हैं वह सोच सकता है कि हमारा शिष्टाचार एक

पाखण्ड है, यानी कि हम अतिशय विनम्र हैं, बातें कहने का गर्वित तरीका है या हम विनम्र हैं लेकिन वास्तव में यह हमारे अहंकार का प्रदर्शन है।

यदि ऐसी अभिव्यक्ति से गलतफहमी होती है, तो मुझे लगता है कि कुछ मामलों में अधिक व्यक्तिपरक अभिव्यक्ति "मैं करूँगा," का प्रयोग करना उत्तम होगा। लेकिन, क्योंकि रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य "मुझे मदद करने की अनुमति दें" का अक्सर प्रयोग करते हैं, और साथ ही इसमें "सब कुछ के प्रति धन्यवाद और दूसरों की सहायता करने में सक्षम रहने" की हमारी भावना है, हमारे लिए "मुझे मदद करने की अनुमति दें" जैसी अभियुक्ति का प्रयोग स्वाभाविक है।

बुद्ध के प्रति आभारी होना

हम वास्तव में बिना सोचे समझे आदतन कहते हैं कि "मुझे मदद करने की अनुमति दें।" मैंने अभी कहा है, इनमें हमारी भावनाओं की एक अभिव्यक्ति है, जैसेकि "प्रत्येक चीज के लिए कृतज्ञ होना, मैं इसे कर सकता हूँ" और "मैं मदद करने में सक्षम होने के लिए आभारी हूँ।" हालांकि, हम उस हालत में, "प्रत्येक चीज के लिए धन्यवाद" या "मैं आभारी हूँ" कहते हैं जब हम "मुझे मदद करने की अनुमति दें," कहते हैं, इसमें हमारी भावनाओं की ईमानदारी दिखती है। पुरानी कहावत की तरह, उचित स्वरूप महत्वपूर्ण है। जब हम बारबार कहते हैं, "सब कुछ करने के लिए धन्यवाद, मैं आभारी हूँ कि मैं मदद कर सकता हूँ," तो प्रतीत्य समुत्पन्न का सिद्धांत हमारे दिल में अंकित हो जाएगा और हम दिल से उन शब्दों को हमेशा कहने में सक्षम होंगे। आदर्श रूप में, उस हालत में, कृतज्ञता के इस अभ्यास से, "मुझे मदद करने की अनुमति दें," न केवल बुद्धों और बोधिसत्त्वों के मुक्त निर्बाध आचरण की तरह होगा बल्कि हमें अनासक्त आनन्दोल्लास देगा।

हालांकि, यद्यपि हम दिल से कहते हैं कि "मदद करने के लिए मुझे अनुमति दें" और हमें देवताओं और बुद्धों के प्रति कृतज्ञता का भाव आ जाता है, परन्तु हर समय यह आवश्यक नहीं कि आनन्दोल्लास का माहौल बने। मैंने सुना है कि देखभाल और अपनी सेवा देने के कार्य में, ऐसे लोग नहीं हैं, जिन्हें जटिल भावनाओं से निपटना नहीं पड़ता है। इसलिए, यह स्वाभाविक है कि उनमें से कुछ लोग कभीकभी बड़बड़ाते हैं या शिकायत करते हैं, जैसे "यह बहुत कठिन है" या "ऐसा कोई तरीका नहीं है कि मैं इसे करूँगा।"

इसलिए, मुझे लगता है यह महत्त्वपूर्ण है कि हम धर्मावलम्बी अपने दैनिक जीवन में बुद्ध की शरण लेने के बारे में सोचें और उस सार्वभौम महाशक्ति का अहसास करें, जो हमारे जीने का कारण है, और उसके प्रति आभारी रहें।

From *Kosei*, May 2017

Childcare lifeline

मैं अपने पुत्र के संबन्ध में चिंतित हूँ, जो स्वयं सब कुछ करना चाहता है

Q मेरा पाँच वर्षीय पुत्र स्वयं सब कुछ करना चाहता है, कहता है, "मैं यह करूँगा ।" मैं नाराज़ हो जाती हूँ, विशेषकर जब मैं घर का काम पूरा करने की दौड़भाग में होती हूँ । मैं कैसे इस समस्या का हल करूँ?

A मुझे लगता है कि आप एक अद्भुत माँ हैं । आपने अपने पुत्र की आत्मनिर्भरता के विकास को ध्यान में रखकर उसका लालन पालन किया है, ताकि वह स्वयं सब कुछ करने की कोशिश कर सके ।

बचपन प्रारंभिक विकास का वह चरण है जिसमें बच्चे की बहुशिक्षा तथा विकास उनको स्वतंत्र होकर सबकुछ करने की दिशा में ले जाता है । क्योंकि वे जिज्ञासा से भरे होते हैं, उनकी सभी चीजों में रुचि होती है जिन्हें वह देख और स्पर्श कर सकते हैं । वे सब कुछ का अनुभव करने का प्रयास करते हैं । इसलिए वे हमेशा आगे बढ़ रहे हैं और इधर उधर जा रहे हैं, और कभी भी एक जगह स्थिर नहीं रहते हैं । उन अवसरों पर मुझे आशा है कि आप अपने पुत्र की आकांक्षाओं को सावधानी से पोषित करेंगी । मैं चाहता हूँ कि आप उसकी जिज्ञासाओं को संतुष्ट करेंगी और देखेंगी कि वह किस प्रकार विकास कर रहा है ।

मुझे लगता है कि यदि मातापिता बच्चे को उनके बचपन में डाँटते फटकारते रहते हैं, उन्हें केवल दो स्थितियों में सीमित कर देते हैं जैसेकि—:

1. जब वे एक खतरनाक रास्ते में खेल रहे हैं;
2. जब वे सामाजिक नियमों का पालन नहीं कर रहे है

बचपन युवावस्था की ओर बढ़ते कदम के लिए प्रशिक्षण का काल है । यह महत्त्वपूर्ण है कि आप अपने पुत्र को वही करने दें जो वह करना चाहता है, जबतक कुछ खतरे का कारण नहीं है और न ही अन्य की परेशानी का कारण है ।

जब आप कुछ करने की जल्दी में हैं, तो कृपया अपने पुत्र से कहें कि "अभी मैं व्यस्त हूँ, इसलिए मुझे तुम्हें देखने के लिए पर्याप्त समय नहीं है । कृपया इसे बाद में दोबारा करो।" मुझे लगता है कि आपका पुत्र आपकी बातों को समझ लेगा । यदि आप दैनिक जीवन में हमेशा उसकी इच्छा या रुचि पर तत्क्षण ध्यान देती हैं, क्योंकि बचपन में बच्चे के लिए हर चीज पहला अनुभव है, वह आप के साथसाथ आपकी तरह सारे काम उतनी सफाई से नहीं कर सकता है, परन्तु उसे जो अनुभव होता है उससे सीखने का असहज प्रयास और लगे रहने की दृढ़ता आयेगी और उसे "जीने की शक्ति" देगी ।

Point बच्चे बार बार गिर गिर कर बड़े होते हैं

बच्चे जो कुछ भी करते हैं, यदि आप हमेशा उसे "नकारते" हैं, तो उसे स्वयं करने की प्रेरणा नहीं मिलेगी । जितना संभव हो, उसे उतना अनुभव करने का मौका दें । मैं आशा करता हूँ कि आप एक ऐसी माँ हैं जिसे अपने बच्चों की विफलताओं को स्वीकार करने में अप्रसन्नता नहीं होगी ।

(टोक्यो अनुसंधान संस्थान के परिवार शिक्षा द्वारा प्रदान उत्तर)

The Tokyo Research Institute for Family Education इस आधार पर काम करता है कि “यदि माता पिता बदल सकते हैं तो बच्चों में भी परिवर्तन आयेगा ।“हम विभिन्न स्थानों में प्रेजेंकशन देते हैं और संबन्धित माता पिता को अपनी सलाह देते हैं ।”
“Family education from their children” कार्यक्रम में हमारी मदद से अनेक हँसते खेलते परिवार निकल आये ।

आपका पुत्र अपनी ओर से उत्तम प्रयास कर रहा है

आप एक इतनी अद्‌भुत माँ हैं। आप खुले दिल दिमाग से अपने पुत्र के साथ बातें करती हैं और अपने अतिव्यस्त कार्यक्रम के अतिरिक्त, प्रत्येक दिन उसका पूरा ध्यान रखती हैं। इस बीच, आपका पुत्र भी अपनी माँ की तरह कठिन प्रयास कर रहा है, क्या ये सत्य नहीं है ?

प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि "यदि हम इस विचार को दिल में रखते हैं कि हम सभी को बुद्ध का जीवन मिला है और बुद्ध मार्ग पर चलने के लिए प्रत्येक दिन स्वयं को समर्पित हैं, तो हमें केवल अद्‌भुत चीजों का अनुभव होगा।" कोकोरो न मनाको ओ हिराकु [मन की आँखें खोलना], पृष्ठ 63)।

वास्तव में, जब आपके सामने कार्यों का पहाड़ है, फिर भी आप के लिए महत्त्वपूर्ण है कि कुछ क्षण रुक कर अपने पुत्र की ओर प्रेसिडेण्ट निवानों की आँखों से देखें। तब आप अपने पुत्र की आत्मनिर्भरता में उभरते आध्यात्मिक विकास को देख पायेंगी, क्योंकि वह स्वयं के लिए काम करने की कोशिश करता है, दृढ़ता से कहता है, "मैं यह करूँगा !" इस तरह, आपको अपने पुत्र के प्रति खीज के बजाय प्यार आयेगा। जल्दी में होने के कारण यदि आपको उसकी बातों से झुंझलाहट होती है तो आप उससे इन शब्दों में क्यों नहीं कहती हैं: "महान ! इसे जारी रखो !, तुम कर सकते हो !"

(धर्म शिक्षा और मानव संसाधन विकास विभाग, रिश्शो कोसेइ काइ द्वारा संपादकीय पर्यवेक्षण)

Please give us your comments!

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus.

living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Director's Column

कृतज्ञभाव से दूसरों को लाभ पहुँचाना

एक जापानी स्वयंसेवक संगठन में किसी ने मुझसे एक बार कहा, "जब रिश्शो कोसेइ काइ के लोग अपनी सेवा देते हैं, वे हमेशा कहते हैं कि 'अपनी सेवा देने का अवसर देने के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।' मैं हमेशा उनकी ईमानदारी और विनम्रता से प्रभावित हुआ हूँ।" वास्तव में, आभार व्यक्त करने के भाव से दूसरों को लाभ पहुँचाने की भावना को हम रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्यों ने आत्मसात कर लिया है। संस्थापक निक्क्यो निवानो ने हमें जीवन में इसे अपने आचरण से दिखाया है।

लगभग बीस वर्ष पूर्व, मुझे जापानी बहुधार्मिक सम्प्रदायों की बैठक में संस्थापक निवानो की उपस्थिति का साक्षी होने का मौका मिला था। जब उन्होंने बैठक में प्रवेश किया, विभिन्न धर्मों के नेतागण ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। उनका चेहरा संस्थापक की उपस्थिति से खिल गया। अपना स्थान ग्रहण करने के बाद उन्होंने कहा, "हमारा यह वर्ष बहुत सफल रहा है। यह आप सभी के अद्‌भुत प्रयासों का प्रतिफल है।" उन्होंने अपने प्रयासों का कुछ भी उल्लेख नहीं किया। उनके शब्दों में प्रत्येक उपस्थित जन के प्रति गहरी कृतज्ञता की अभिव्यक्ति थी। मैंने सभी कार्यों तथा सभी लोगों के सहयोग के लिए उनमें अत्यधिक प्रशंसा का भाव देखा। संस्थापक निवानो का चेहरा चमक रहा था।

पूर्व के कर्मों से जुड़े होने के कारण हम दूसरों की सेवा करने में सक्षम हैं। मैं कृतज्ञता के साथ दूसरों की सहायता करना जारी रखूँगा।

शोको मिजुतानी
रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय बिभाग निर्देशक

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers 2017

Rissho Kosei-kai International

3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles
CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927
e-mail: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654
e-mail: murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls
1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204, U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419, U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000, Brasil
Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung
No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,
Taichung City 401, Taiwan
Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 *Fax:* 886-4-2215-0647

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960
e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949
e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Venezia
Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

Rissho Kosei-kai of Paris
86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

International Buddhist Congregation (IBC)
3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
3F Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi
66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka
New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,
Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax*: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai